NAME :- **MOHD SHAHID**
SUPERVISOR :- **DR. PADMANABH SAMARENDRA**
DEP/CENTER :- **DR. K.R NARYANAN FOR DALIT AND MINORITIES STUDIES**
TITLE OF THESIS :- **PRATHAMIK SHIKSHA KARYAKRAM AUR MUSLIM LADHKIYAN : DILLI KE SANDARBH MEIN EK ADHYAYAN**

यह शोध दिल्ली के मुस्लिम लड़कियों के प्राइमरी शिक्षा के सन्दर्भ में पिछले दो दशकों से चल रहे कार्यक्रमों के सम्बन्ध में है| इस शोध में सबसे पहले मुस्लिम लड़कियों के शैक्षणिक पिछड़ेपन को समझने की कोशिस की गयी है| यद्यपि, शोध के दौरान मुस्लिम लड़कियों की विशेष समस्याओं को समझने का प्रयत्न किया गया, लेकिन यहाँ यह जोड़ना जरूरी है की मुस्लिम लड़कियों की समस्या को मुस्लिम समाज या फिर भारतीय समाज से बिलकुल अलग कर नहीं देखा जा सकता|

इस कमजोर व्यवस्था को पिछले दो दशकों में ठीक करने के लिए सरकार ने अनेक कदम उठाये| सन 1986 में शिक्षा की नयी नीति लाई गयी और 1992 में इस नीति के उद्देश्यों को पाने के लिए Plan of Action बना| मुख्य उद्देश्य था Universal Elementary Education के लक्ष्य को पाना| यद्यपि अल्पसंख्यकों तथा लड़कियों के शिक्षा के लिए विशेष कार्यक्रम बने, मुस्लिम लड़कियों की शिक्षा के लिए अलग से कोई योजना नहीं बनाई गई| इन सारी योजनाओ के वाबजूद भारतीय समाज, मुस्लिम समुदाय और मुस्लिम लड़कियों की शैक्षणिक अवस्था में अपेक्षित उन्नति नहीं हुई है|

अतः मुस्लिम समाज में शैक्षणिक पिछड़ेपन के आयामों को एक बार फिर से समझने की जरूरत है| गरीबी और ढांचागत सुविधाओं के अभाव के अलावा शायद हमें समुदाय के अन्दर झांक कर देखना होगा| मुसलमान समुदाय के अन्दर विभिन्न वर्ग अशिक्षा की समस्या से अलग अलग जूझ रहे हैं| धर्म, समाज और संस्कृति का असर इन वर्गों पर अलग अलग देखा जा सकता है| समुदाय के चिंतन की एक झलकी हमें उन साक्षात्कारों से मिली जो एक गरीब मोहल्ले के लोगों ने दी| लड़कियों की असुरक्षा, शादी की समस्या, पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव, परिवार से कट जाना, और यहाँ तक की दिमाग चढ़ जाना भी लड़कियों के शिक्षित होने से रोके जाने के कारणों के रूप में दिया गया| शिक्षा के प्रसार में जितने तरह की बाधाएं हैं उसकी एक छोटी बानगी इन वक्तव्यों में दिखती है|

अगर समस्या इतनी जटिल है तो समाधान का रूप क्या होगा? इतना तो तय है की अगर समस्या बहु-आयामी है तो समाधान भी बहु-आयामी होना होगा| इसका मतलब है की एक तरफ तो मुसलमानों की गरीबी, अलगावपन, स्कूली सुविधाओं के अभाव को ख़त्म करना होगा तो दूसरी तरफ समुदाय के भीतर जाग्रति पैदा करनी होगी| समुदाय के रिसोर्सेज को mobilize करना होगा ताकि शिक्षा के मामले में लड़कियाँ और पिछड़ी न रहें|